



ISSN Print: 2394-7500
 ISSN Online: 2394-5869
 Impact Factor: 5.2
 IJAR 2017; 3(7): 265-267
 www.allresearchjournal.com
 Received: 07-05-2017
 Accepted: 08-06-2017

मोनिका जाखड़

शोध-छात्रा, भूगोल विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ पंजाब, भारत

भारत में वनोन्मूलन की स्थिति

मोनिका जाखड़

सारांश

इस शोध-पत्र में वन का महत्व और वनोन्मूलन की घटना के बारे में चर्चा की गई है। भारत में वनोन्मूलन की परिस्थिति का भी वर्णन किया गया है। इस इकाई में हमने वनोन्मूलन के मुख्य कारण और प्रभावों का विश्लेषण भी किया गया है। इसके अतिरिक्त, संभव उपचारी उपायों पर भी चर्चा की गई है। सह महसूस किया गया है। कि वनोन्मूलन बहुत अधिक चेतावनी देने वाला हो रहा है और सम्पूर्ण समुदाय को इस आपदा से विश्व को सुरक्षित बनाने के लिए कल्पना करनी होगी और सोचना होगा। वनोन्मूलन के तत्काल प्रभाव अभी मालूम नहीं होंगे, परन्तु यदि यह पीढ़ी इस संबंध में अनिवार्य रूप से कार्य नहीं करेगी तो अगली पीढ़ी को इसके परिणाम भुगतने होंगे। इस तरह वन और पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए तुरन्त प्रयास करने की जरूरत है। इस इकाई में वनोन्मूलन आपदा प्रबंधन पर भी चर्चा की गई है।

कुट शब्द: वनोन्मूलन, आपदा प्रबंधन, वानिकी, वन आच्छद

प्रस्तावना

भारत में कुल भूमि के 22 प्रतिशत भाग पर वानिकी है जो कृषि के बाद सबसे बड़ा भूमि का उपयोग है। फिर भी वानिकी और लट्टे काटने (Logging) का सकल घरेलू उत्पाद में 2001 में, केवल 1.1 प्रतिशत योगदान था (विश्व बैंक)। भारत के लगभग 41 प्रतिशत वन आच्छद (Forest cover) कुछ मात्रा में क्षतिग्रस्त हो गया, 78 प्रतिशत वन में भारी मात्रा में चराई की जाती है 50 प्रतिशत वन को वन में लगने वाली आग से खतरा रहता है और लकड़ी को ईंधन के रूप में जलाने के लिए घरेलू माँग पहले ही वन अस्तित्व के स्तर से बढ़ी हुई है। यह देखा गया है कि पृथ्वी पर उष्णकटिबंधीय वनों की कटाई करने का कार्य बड़े पैमाने पर अनेक शताब्दियों से हो रहा है। यह प्रक्रिया वनोन्मूलन (वन कटाई) के नाम से जानी जाती है जिसमें वनों को काटना जलाना और क्षति पहुँचाना शामिल होता है। उष्णकटिबंधीय वर्षा-प्रचुर वनों (tropical rain forest) का नाश बहुत अधिक हो रहा है। यदि वनोन्मूलन की वर्तमान दर जारी रही तो विश्व को वर्षा-पुचर वन 100 वर्षों में समाप्त हो जाएँगे जो विश्व की जलवायु पर अज्ञात प्रभाव डालेंगे और इस ग्रह पर से अधिकांश पौधे और जन्तुओं की प्रजातियों को समाप्त कर देंगे। यह अनुमान किया गया है कि वनोन्मूलन के कारण प्रतिवर्ष पौधे और जन्तुओं को 50, 000 प्रजातियाँ खत्म हो जाती है। इसका अर्थ यह हुआ कि प्रति 12 मिनट पर एक पौधे और जन्तु की पूरी की पूरी प्रजाति पृथ्वी पर अपने अस्तित्व से गायब हो जाती है।

भारत एक बहुत बड़ा देश है जिसके चारों ओर आबादी और परिस्थिति की कर्मता उपस्थित है और जो जैव- विविधता में बहुत समृद्ध है, साथ ही यह मानव संस्कृतियों की व्यापक विविधता और समृद्धि में सहायता करता है।

भारत में वनोन्मूलन बहुत तेज़ गति से हो रहा है। वन का अत्याधिक शोषण दूसरे विश्व युद्ध के बाद से आरम्भ हो गया था। जब ब्रिटिश लोगों ने अपनी आवश्यकता के लिए वन की सफाई करनी शुरू की थी। स्वतंत्रता के बाद की अवधि भारत में शोषण की प्रक्रिया में रेलवे, खानन, नदी घाटी परियोजनाएँ, रक्षा आदि का विकास परियोजनाओं की पूर्ति भारत के लिए वृद्धि हो गई। कृषि संबंधी गतिविधियों के प्रसार और शहरीकरण के कारण भी वनों का शोषण हुआ है। 1951-75 की अवधि के दौरान 43.28 लाख हैक्टेयर क्षेत्र विभिन्न विकास कार्यों के कारण गायब हो गया। लगभग 2 मिलियन हैक्टेयर के क्षेत्र का सबसे अधिक वनोन्मूलन मध्यप्रदेश में हुआ है। (जिसमें छत्तीसगढ़ शामिल है) महाराष्ट्र में एक मिलनियन हैक्टेयर की क्षति हुई है। उड़ीसा, आंध्र प्रदेश, जम्मू और कश्मीर में वन की कुल क्षति 1 मिलियन हैक्टेयर हुई। राजस्थान और हिमाचल प्रदेश में क्षति लगभग 1/2 मिलनियन हैक्टेयर थी। परन्तु अनुपात के संदर्भ में राजस्थान, हरियाणा और पंजाब में अपना आध वन आच्छद (Cover) खो दिया और हिमाचल प्रदेश और जम्मू व कश्मीर के राज्यों ने एक तिहाई वन आच्छद खो दिया। त्रिपुरा, मिजोरम, मणिपुर और मेघालय भारत के सबसे अधिक वनोन्मूलन से प्रभावित राज्य हैं।

Correspondence

मोनिका जाखड़

शोध-छात्रा, भूगोल विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ पंजाब, भारत

यह समझने के लिए कि वनोन्मूलन क्यों इतना तत्काल और महत्वपूर्ण मुद्दा है, वनों को इस बात का श्रेय पहले देना चाहिए कि वह विश्व के पारिस्थितिक तंत्र और जीवन की गुणवत्ता द्वारा विश्व को क्या प्रदान करते हैं, जिससे सभी प्रजातियाँ अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं। उष्णकटिबंधीय वर्षा-प्रचुर वन वर्तमान में 50-90 प्रतिशत जीवाणुओं को घर उपलब्ध कराते हैं। वनोन्मूलन से न केवल प्रजातियों को खतरा होता है, परन्तु पेड़ भी मानव जाति को बहुत से लाभ उपलब्ध कराते हैं। जिनकी हानि होनी है। विश्व के वर्षा प्रचुर वन आन्दोलन के अनुसार 25 प्रतिशत औषधियाँ वनों से प्राप्त होती हैं। इस संख्या से सभी रोगों का उपचार नहीं होता और जिनके बारे में अभी तक खोज नहीं हुई है अथवा जो नष्ट हो गई है। वन दूसरी प्रजातियों को जीवन ही नहीं देते, परन्तु मानव जाति को भी लम्बा जीवन जीने में सहायता करते हैं। वनों की न केवल जीवन और विश्व के लिए अनिवार्यता होती है, परन्तु वह जीवन को गुणवत्ता भी प्रदान करते हैं। वृक्षों से हवा की गुणवत्ता में सुधार होता है, जो प्रजातियाँ अपनी साँस में लेती हैं और यह वृक्ष कार्बन और अन्य कणों को जो प्रदूषण द्वारा उत्पन्न होते हैं अपने में अवधारित कर लेते हैं। इसके अतिरिक्त वर्षा के जल को अवधारित करते हैं और पर्यावरण को ताजगी से भर देते हैं। यह पृथ्वी की जलवायु को शीतल बनाए रखते हैं और अन्य अमूल्य कार्यों के साथ जैसे अपरदन को रोकना, भूस्खलन और उर्वरक मिट्टी को जीवन से पूर्ण और समृद्ध बनाने द्वारा जलवायु को नियमित करते हैं। वनोन्मूलन की वास्तविक दर को ज्ञात करना बहुत कठिन होता है। वैज्ञानिक, उष्णकटिबंधीय वनों के वनोन्मूलन का अध्ययन, सफाई किए गए (काटे गए) वनों को सैटेलाइट से देखे गए दृश्य का विश्लेषण करके करते हैं। यदि वनोन्मूलन वर्तमान दर से जारी रहा तो वैज्ञानिकों ने यह अनुमान लगाया है कि वर्ष 2030 तक सभी उष्णकटिबंधीय वर्षा-प्रचुर वन परिस्थिति तंत्र पूरा नष्ट हो जाएगा।

वनोन्मूलन के कारण

वनोन्मूलन कई तरीकों से होता है। वन की अधिकांश सफाई कृषि प्रयोजनों के लिए अर्थात् ढोर चराने और फसल उगाने के लिए होती है। गरीब किसान एक छोटे क्षेत्र (कुछ एकड़) में स्थित वृक्षों को काट देते हैं और वृक्षों के लट्टों को जला देते हैं। इस प्रक्रिया को स्लैश एण्ड बर्न कृषि कहते हैं। अधिक विस्तृत और आधुनिक कृषि बहत बड़े पैमाने पर होती है। कभी-कभी एक ही समय में कई वर्ग मीलों तक वनोन्मूलन कर दिया जाता है। बड़े बड़े ढोरों के चरागाह के लिए अक्सर वर्षा-प्रचुर वनों की सफाई कर देते हैं।

व्यवसायिक लकड़ी के लट्टे (Logging) काटना वनोन्मूलन का दूसरा आम रूप है। इमारती लकड़ी और गूदे के लिए पेड़ों को काटकर बिक्री की जाती है। लट्टों का चुनाव करके काटा जाता है, और केवल आर्थिक रूप से मूल्यवान वृक्ष प्रजातियों को ही काटा जाता है। व्यावसायिक रूप से पेड़ काटकर लट्टे बनाने का कार्य मशीनों से किया जाता है, जैसे बुलडोजर रोड-ग्रेडर और लॉग स्क्वडर जो पेड़ काटकर सड़क बनाने का कार्य करते हैं। यह कार्य समग्र वन को उसी तरह क्षतिग्रस्त करता है जैसे एक आरी प्रत्येक वृक्ष को काटती चलती है।

वनोन्मूलन के कारण भी बहुत जटिल हैं आज की प्रतिस्पर्धी विश्व अर्थव्यवस्था पैसों के लिए आर्थिक रूप में चुनौती से भरे उष्णकटिबंधीय देशों की तरफ बढ़ रही है। राष्ट्रीय स्तर पर सरकारें परियोजनाओं के लिए पैसा उगाने के लिए वृक्ष के लट्टे काटने में रियायतें प्रदान कर रही हैं ताकि अन्तर्राष्ट्रीय ऋण चुकाया जा सके अथवा उद्योग विकसित किए जा सकें। उदाहरण के लिए ब्राजील पर 1995 में 159 बिलियन डॉलर अन्तर्राष्ट्रीय कर्ज था, जिसको चुकाने के लिए उसे प्रतिवर्ष डॉलरों का भुगतान करना था। वृक्ष के लट्टे बनाने वाली कंपनियाँ वन की

कटाई करने का मौका ढूँढती हैं, ताकि लकड़ी के अमूल्य लट्टे जैसे महोगनी और उसके गूदे बेचकर लाभ कमाया जा सके। किसानों द्वारा किया गया वनोन्मूलन उनके अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए फसल उगाने हेतु किया जाता है और यह मनुष्य की भोजन के लिए आवश्यकता से प्रेरित होता है। अधिकांश उष्णकटिबंधीय देश संयुक्त राज्य अमेरिका के मानकों की तुलना में बहुत गरीब हैं और वहाँ पर अधिकांश जनसंख्या अपना जीवन कृषि पर आधारित करके चलाती है। उदाहरण के लिए ब्राजील में प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय अमेरिकी डॉलर में 5400 है। जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में प्रति व्यक्ति वार्षिक औसत आय 26.980 डॉलर प्रति व्यक्ति है। (विश्व बैंक 1998) बोलिविया में जहाँ अमेजन वर्षा प्रचुर वन का एक भाग है प्रति व्यक्ति औसत आय 800 डॉलर है। इन देशों के किसानों के पास जीवन की आवश्यकताओं पर खर्च करने के लिए पैसा नहीं है, और वह भोजन के लिए लकड़ी बेचकर फसल उगाते हैं। वनोन्मूलन के अन्य कारण भी हैं, जैसे नहर और बाँध बनाना। यद्यपि, बाँध बनाने के मामले में कुल वनोन्मूलन का बहुत ही कम भाग शामिल होता है। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारण भी हैं जो वनोन्मूलन संभव करते हैं इनका वर्णन निम्न उप अनुच्छेदों में किया गया है।

1. जनसंख्या वृद्धि वनोन्मूलन
2. लट्टे काटना और वनोन्मूलन
3. वनोन्मूलन और ढोर चराई

वनोन्मूलन के प्रभाव

वनोन्मूलन बहु सामाजिक और वातावरणीय समस्याएँ उत्पन्न करता है। विश्व वनोन्मूलन के तत्काल और दीर्घ-कालीन परिणाम पृथ्वी पर जीवन में लगभग उथल-पुथल उत्पन्न कर देते हैं जैसा कि हमें ज्ञात है इनमें से कुछ परिणामों में जैव-विविधता की कमी, वन आधारित सामानों का विनोश और जलवायु में विक्षोभ शामिल हैं।

वनोन्मूलन और भ्रमण्डलीय कार्बन चक्र

वनोन्मूलन से पर्यावरण में कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य लेश गैसों की वृद्धि हो जाती है। उष्णकटिबंधीय वनों की मिट्टी और पौधे विश्व में 460-575 बिलियन मीट्रिक टन कार्बन अवधारित करते हैं जिसमें से प्रत्येक एकड़ में 180 मीट्रिक टन कार्बन संग्रहित रहता है। अब वन को काट दिया जाता है और जला दिया जाता है ताकि चरगाह और खेती के लिए भूमि उपलब्ध हो सकते तो कार्बन जो पेड़ के तने में संग्रहित होता है (लकड़ी में 50 के लगभग कार्बन होता है। वह ऑक्सीजन के साथ क्रिया करके कार्बन-डाइऑक्साइड बनाता है और वायुमंडल में उसे विमुक्त करता है।

अनेक कारणों से कार्बनडाइऑक्साइड के स्तरों में वृद्धि हो जाती है। परन्तु कार्बनडाइऑक्साइड के स्तरों में वृद्धि का प्रमुख कारण काष्ठी (लकड़ी के) पदार्थों की सड़न है। वायुमंडल में कार्बनडाइऑक्साइड को कम करने का केवल एक ही तरीका है और वह पौधे के जीवन के द्वारा है। जीवित पेड़ और पौधे सड़े हुए पौधे और पेड़ों से उत्पन्न कार्बनडाइऑक्साइड को अवशोषित कर लेते हैं। पेड़ और पौधे के जीवन में कमी के साथ (वनोन्मूलन के कारण) इस स्तरों को कम करना बहुत कठिन हो जाता है। अन्ततः कार्बन की मात्रा पौधे के जीवन की कमी के कारण बढ़ गयी है जो वर्तमान में कार्बन के स्तर को रोक सकती है। इस पुरी वनोन्मूलन की प्रक्रिया का ऐल्बिडो प्रभाव होती है। जो वायुमंडल में अधिक ताप और प्रकाश को प्रतिबिम्बित करता है।

वनोन्मूलन और जलीय चक्र

उष्णकटिबंधीय वनोन्मूलन किसी भी क्षेत्र की स्थानीय जलवायु को प्रभावित करता है जो वाष्पीकरण शीतल कम करने से मिट्टी

और पौधे के जीवन दोनों में होता है। क्योंकि पेड़ और पौधे जैसे ही काटे जाते हैं उष्णकटिबंधीय वर्षा- प्रचुर वन आच्छद एक-दम कम हो जाती है। अभी हाल ही के अनुसंधान बताते हैं कि वर्षण की आधी मात्रा जो उष्णकटिबंधीय वर्षा पुचर वन पर गिरती है, वह नमी और पेड़ों के आच्छद का परिणाम होती है। वृक्षों और पौधे से होने वाली वाष्पीकरण और वर्षण प्रक्रियाएँ बड़ी मात्रा में जल को स्थानीय वायुमंडल में वापिस भेज देती हैं, जिससे बादल बनते हैं और वर्षण होता है। कम वाष्पीकरण का अर्थ है कि सूर्य की अधिक अवक्षेपण ऊर्जा भूमि की सतह को गर्म करती है और उसके कारण ऊपर की हवा के तापमान में वृद्धि हो जाती है।

संदर्भ

1. भारत सरकार, पर्यावरण मंत्रालय, नेशनल एयर नवालिटी स्टेट्स रिपोर्ट, 2000, केकन्द्रीय प्रदूषण बोर्ड का प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. पीवी, रोवे एंड टकोबैनोग्लोअस, 1998, एनवायर्नमेंटल इंजीनियरिंग, मेग्रा हिल, इन्टरनेशनल न्यूयार्क, यू.एस.ए.।
3. राव. एम. अन. और राव, 1993, एयर पोल्यूशन, टाटा मेग्रा हिल, नई दिल्ली, इंडिया।
4. रिचर्ड और सीनफिल्ड, 1998, फंडामेंटल ऑफ एयर पोल्यूशन इंजीनियरिंग, प्रेन्टिस हॉल, संयुक्त हॉल, अमेरिका।